बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी (BAHDH)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2022

बी.एच.डी.सी.-109 : हिन्दी उपन्यास

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) निर्मला ने कुछ और नहीं सुना । उसे ऐसा जान पड़ा मानो सारी पृथ्वी चक्कर खा रही है । मानो उसके प्राणों पर सहस्रों वज्रों का आघात हो रहा है । उसने जल्दी से अलगनी पर लटकी हुई चादर उतार ली और बिना मुँह से एक शब्द निकाले कमरे से निकल गई । डॉक्टर साहब खिसियाये हुए-से रोना मुँह बनाये खड़े रहे । उसको रोकने की या कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी । निर्मला ज्योंही द्वार पर पहुँची उसने सुधा को ताँगे से उतरते देखा । सुधा उसे देखते ही जल्दी से उतरकर उसकी ओर लपकी और कुछ पूछना चाहती थी, मगर निर्मला ने उसे अवसर न दिया, तीर की तरह झपटकर चली । सुधा एक क्षण तक विस्मय की दशा में खड़ी रही । बात क्या है, उसकी समझ में कुछ न आ सका । वह व्यग्र हो उठी ।

(ख) यहाँ किसी को कहने का लोभ नहीं है कि मैं सच्चरित्र हूँ । यहाँ सच्चरित्रता के अर्थ में मानव का मूल्य नहीं जान जाता । दुर्जनता ही मानो कीमती है । यहाँ उसी हिसाब से मानव की घट-बढ़ कीमत है । मैं मानती हूँ कि यही रोग है, यही भयानक जड़ता है । किन्तु यही लाभदायक भी है । इस जगह आकर यह असंभव है कि कोई अपने को सच्चरित्र दिखाए, दिखाना चाहे, या दिखा सके । यहाँ सदाचार का कुछ मूल्य ही नहीं है, अपेक्षा ही नहीं है । बल्कि ऋण मूल्य है । अगर कहीं भीतर, बहुत भीतर मज्जा तक में छिपा पशुता का कीड़ा है तो यहाँ वह ऊपर आ रहेगा । यहाँ छल असंभव है, जो छल कि सभ्य समाज में जरूरी ही है ।

(ग) जब जीवन का मूल्यांकन करने बैठा हूँ तो उसे भी सुना दूंगा । जीवन-माला की प्रत्येक मंज़िल पर मुझे श्री रामचरणानुराग मिला । अतः कथा मेरी न होकर भक्ति-धारा के प्रवाह की ही है । फिर उसे सुनाने में मुझे संकोच क्यों हो । कहकर बाबा चुप हो गए । क्षण भर ऐसे ही बीता, फिर वे रामू के हाथों से अपना पैर झटका देकर छुड़ाते हुए सहसा उठ बैठे । उनकी दृष्टि किसी दूरागत दृश्य को देख रही थी । स्मृति लोक में नगाड़े बज रहे थे और अंधकार क्रमशः उजाले में परिवर्तित होता जा रहा था । मनोदृष्टि में हिमाच्छादित कैलास पर्वत और मानसरोवर का परमपावन और सुहावना दृश्य झलका । नगाड़ों की ध्वनि मानो हर-हर कर रही थी ।

(घ) मरने के समय वह चिर स्थिर था, शांत था, अडिग और निर्भय । वह सब में रम रहा है, मेरे और जल्लाद के भीतर यही है, जल्लाद की तलवार और मेरे सिर में भी यही है । सब में वही है । सब बराबर है । लाखी और अटल में वही है ! दोनों में वही है ? फिर मैंने उन दोनों के बीच में भेद क्यों किया ? पर वह तो वर्णाश्रम की बात थी । जो कुछ भी हो, अब किसी के लिए मन में कोई बुराई नहीं । सिकन्दर के लिए नहीं, मौलवियों के लिए नहीं, किसी के लिए नहीं ।

(ङ) अजय ने भी जाने क्या चाहा था उससे । वह नहीं दे पाई तो अजय उसकी ज़िंदगी से निकल गया । अब बंटी भी कुछ चाहता था । पता नहीं बंटी ही चाहता था या कि अजय ही बंटी में उतरकर नए सिरे से फिर वही चाहने लगा था, जो तब वह उसे नहीं दे पाई थी । नहीं, यह उसका भ्रम है । अजय उससे कुछ नहीं चाहता । वह अपनी भरी-पूरी ज़िंदगी जी रहा है । उसने शकुन को काट दिया है, शायद कोई कसक भी बाकी नहीं है । पर जब शकुन ने अपने जीवन को भरा-पूरा करना चाहा, अजय की कसक को भी धो-पौंछना चाहा तो बंटी...

2. प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्णित देशकाल का परिचय दीजिए । *16*

3. 'निर्मला' उपन्यास के परिवेश का विस्तृत विवेचन कीजिए । *16*

4. 'त्याग-पत्र' उपन्यास के संरचना-शिल्प पर प्रकाश डालिए । *16*

5. 'मानस का हंस' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए । *16*

6. 'मृगनयनी' के प्रतिपाद्य को विश्लेषित कीजिए । *16*

7. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का परिचय दीजिए । *16*

8. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी उपन्यास

(ख) 'बूँद और समुद्र' उपन्यास

(ग) 'निर्मला' की संवाद योजना

(घ) 'मृगनयनी' में इतिहास और कल्पना